मधुबन ओम् शान्ति अंक 341 दिसम्बर 2020

पत्र-पुष्प

समय प्रमाण पुरुषार्थ की गति में नवीनता व तीव्रता लाने के लिए विशेष याद पत्र

(25-11-20)

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा अव्यक्त स्थिति भव के वरदानी, अशरीरी बाप को अपने रूहानी स्नेह के बंधन में बांधने वाली निमित्त सेवाधारी टीचर्स बहिनें तथा ब्रह्मा बाप समान सपूत बन सबूत देने वाले सभी देश विदेश के भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - संगमयुग नदियों का सागर में समाने का यह सुन्दर गंगा सागर का मेला है। सभी बाबा के बच्चे रूहानी याद की यात्रा में रह प्यार के सागर में समाने का अनुभव करते हैं। यह आत्मा और परमात्मा का मिलन कितना सुहावना है। सभी हद के मेरे-मेरे से, कर्म और सम्बन्ध में स्वार्थ भाव से मुक्त बन सदा स्व की श्रेष्ठ स्थिति बनाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। सदा स्व-चिंतन, ज्ञान चिंतन, शुभ चिंतन करते हुए प्रकृति के चिंतन से, व्याधियों के चिंतन से मुक्त रह अब अपनी कर्मातीत स्थिति बनाने का तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं।

इस बार तो मधुबन के सभी स्थानों पर दीपावली भी बहुत अलौकिक रीति से मनाई गई। हर एक ने अपने दीपराज बाप के साथ अव्यक्ति मिलन मनाते हुए योग तपस्या की। आप सबने भी इसी रीति से यह खुशियों भरा त्योहार मनाया होगा!

अभी तो मधुबन बेहद घर शान्तिवन में छोटे-छोटे ग्रुप्स में कुछ भाई बहिनें योग भट्ठियां करने तथा प्यारे अव्यक्त बापदादा के शक्तिशाली वायब्रेशन लेने, उनकी दिव्य शक्तियों का अनुभव करने के लिए आते रहते हैं। आप सभी भी ऑन लाइन वीडियो के द्वारा बहुत अच्छी अनुभूतियां कर रहे होंगे! बापदादा अपने अव्यक्त महावाक्यों में पूरा ही होमवर्क बच्चों को दे देते हैं। सभी उसी लगन से पुरुषार्थ करते आगे बढ़ते रहते हैं। अब प्यारे बापदादा के इशारों प्रमाण हम सबको अपनी सूक्ष्म चेकिंग करते हुए स्वयं को बाप समान सम्पन्न बनाना है। जैसे ब्रह्मा बाबा डबल लाइट फरिश्ता बनें, ऐसे हम सबको भी चेक करना है कि

1) सदा आत्मिक स्वरुप में स्थित रह डबल लाइट स्थिति का अनुभव होता हैं? देह व पुरानी दुनिया की आकर्षण का कोई भी बंधन अपनी ओर आकर्षित तो नहीं करता है?

2) लौकिक-अलौकिक कोई भी जिम्मेवारी निभाते हुए सदा डबल लाइट स्थिति रहती है? प्रवृत्ति में रहते हुए न्यारे और प्यारे, बालक और मालिकपन का बैलेन्स रहता है?

3) किसी भी संस्कार-स्वभाव का बोझ तो नहीं है? व्यर्थ संकल्पों के बोझ से भी हल्के हैं? योग में मेहनत का अनुभव तो नहीं होता है?

4) ब्रह्मा बाप समान ''मेरे-मेरे'' का परिवर्तन कर ''सब कुछ तेरा'' किया है? कहीं भी मेरापन तो नहीं है?

5) सदा डबल लाइट (फरिश्ता स्थिति में) रहने का अभ्यास है? यह अभ्यास ही सेफ्टी का साधन है। आपको देखते हर एक अनुभव करे कि यह तो लाइट जा रही है, उन्हें यह मिट्टी का शरीर दिखाई न दे।

बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें, अब यही अभ्यास चल रहा है ना! अपनी सब जिम्मेवारियां बाप हवाले कर सदा बेफिकर बादशाह की स्थिति में डबल लाइट होकर रहना है। कभी चेहरे पर फिक्र के चिन्ह दिखाई न दें क्योंकि इस ड्रामा की हर सीन बहुत-बहुत कल्याणकारी है। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

"ज्ञान के मनन-चिन्तन द्वारा अनुभवीमूर्त बनो"

1) ज्ञान की जो प्वाइंट्स सुनते हो उसे पहले मनन करो, बाद में उसका वर्णन करो। जो बातें मनन की जाती हैं उनको वर्णन करना सहज हो जाता है। तो मनन करते और वर्णन करते चलो। मनन करते-करते मगन अवस्था आटोमेटिकली हो जायेगी। जो मनन करना नहीं जानते वह मगन अवस्था का भी अनुभव नहीं कर सकते। जो भी ख़ज़ाना मिलता है उसके ऊपर मनन करने से अन्दर समाता जायेगा।

2) जो मनन करने वाले होंगे उन्हों के बोलने में भी विल पावर होगी, किसके बोलने में शक्ति का अनुभव होता है, क्यों? सुनते तो सभी इकट्ठे हैं। प्रॉपर्टी तो सभी को एक जैसी एक ही समय मिलती है। जो मनन करके उस दी हुई प्रॉपर्टी को अपना बनाते हैं, उन्हें उसका नशा रहता है। अभी मनन करने का अभ्यास अपने में डालते जाओ फिर सदैव ऐसे नज़र आयेंगे, जैसे अपनी मस्ती में मस्त रहने वाली अनुभवी आत्मा हैं।

3) मनन करने से ज्ञान की गहराई में जाते हो, यही अन्डरग्राउण्ड स्टेज है। जैसे अन्डरग्राउण्ड रहने से बाहर के बॉम्बस् आदि का असर नहीं होता है। इसी रीति से मनन में रहने से, अन्तर्मुख रहने से बाहरमुखता की बातें डिस्टर्ब नहीं करेंगी। देह अभिमान से गैर हाज़िर रहेंगे। ज्ञान खजाने को मनन करने से मगन अवस्था आटोमेटिकली रहेगी, खुशी और खुराक दोनों मिल जायेंगी।

4) सहनशील ही मनन शक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। सहनशील जो होता है वह अन्दर ही अन्दर अपने मनन में तत्पर रहता है और जो मनन में तत्पर रहता है – वही मगन रहता है। तो सहनशीलता बहुत आवश्यक है। उनका चेहरा ही गुण मूर्त्त बन जायेगा। जैसे वर्णन करना सहज है ऐसे मनन करना भी सहज हो।

5) जो मनन करते हो, वर्णन करते हो वह स्वरूप बन अन्य आत्माओं को भी उन स्वरूपों का अनुभव कराओ। एकान्त में जाने से मनन शक्ति बढ़ेगी। अन्तर्मुखी होकर मनन करते रहेंगे तो विघ्नों से बचे रहेंगे। समय भी बचेगा और संकल्पों की भी बचत होगी।

6) मनन शक्ति की कमजोरी के कारण मैजारिटी की यही रिपोर्ट रहती है कि व्यर्थ संकल्पों को कन्ट्रोल कैसे करें। अपनी कमजोरियों का मालूम तो पड़ जाता है। उस पर समझानी मिलने से अन्दर दब जाती हैं लेकिन संस्कारों को खत्म करने के लिए लाइट और माइट रूप बनना है। पुरुषार्थ के मार्ग को सहज और स्पष्ट करने के लिए नॉलेज की लाइट चाहिए। इस लाइट के लिए फिर मनन शक्ति चाहिए।

7) मन्सा के लिए है मनन शक्ति और वाचा तथा कर्मणा के लिए है सहनशक्ति। सहनशक्ति है तो फिर जो भी शब्द बोलेंगे वह साधारण नहीं होगा। दूसरा कर्म भी जो करेंगे वह भी उसके प्रमाण ही करेंगे। तो दोनों ही शक्तियों की आवश्यकता है। सहनशक्ति वाले की ही अव्यक्त स्थिति वा शुद्ध संकल्पों के स्वरूप की स्थिति रहेगी।

8) जितना-जितना मनन की शक्ति से अपनी बुद्धि को शुद्ध संकल्पों में बिज़ी रखते हो, उतना व्यर्थ जो बुद्धि में भरा हुआ है वह निकलता जाता है। एक होता है पहले सारा निकालकर फिर भरना और दूसरा होता है भरने से निकालना, अगर खाली करने की हिम्मत नहीं है तो दूसरा भरते जाने से पहला आपेही खत्म हो जायेगा।

9) ज्ञान की प्वाइंट्स पर मनन करके मक्खन अर्थात् सार निकालना है, फिर आपस में लेन देन करना है। सुनी हुई बातों को मनन करने के बाद अनुभवी बनेंगे। मिले हुए खजाने को अपने अनुभव में लाने के लिए मनन शक्ति बढ़ाओ। सभी से पावरफुल स्टेज है अपना अनुभव, क्योंकि अनुभवी आत्मा में विल-पावर होती है। अनुभव के विल-पावर से माया की कोई भी पावर का सामना कर सकेंगे।

10) मनन और मगन की कमी होने के कारण आत्माओं में विल-पावर कम है, सिर्फ वर्णन करने से बाह्यमुखता की शक्ति दिखाई पड़ती है लेकिन उससे प्रभाव नहीं पड़ता है। मनन करते हो लेकिन अन्तर्मुख हो करके मनन करना, हर प्वाइंट द्वारा मनन अथवा मंथन करने से शक्ति स्वरुप मक्खन निकालना, इससे ही शक्ति बढ़ती है।

11) नॉलेज का भल मनन चलता है लेकिन अपने में एक-एक प्वाइंट द्वारा जो शक्ति भरनी है वह कम भरते हो इसलिए मेहनत ज्यादा और रिजल्ट कम हो जाती है। मन में, प्लैनिंग में उमंग, उत्साह बहुत अच्छा रहता है लेकिन प्रैक्टिकल रिजल्ट देखते तो मन में अविनाशी उमंग उत्साह,

उल्लास नहीं रहता। एकरस फोर्स की स्टेज तब रहेगी जब एक-एक प्वाइंट का मनन करके आत्मा में शक्ति भरेंगे, इससे अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति का अनुभव होगा।

12) वर्तमान समय मनन शक्ति से आत्मा में सर्व शक्तियाँ भरने की आवश्यकता है तब मगन अवस्था रहेगी और विघ्न टल जायेंगे। विघ्नों की लहर तब आती है जब रुहानियत की तरफ फोर्स कम हो जाता है। कईयों को ज्ञान खजाने को सम्भालना नहीं आता, मिला और खत्म कर दिया तो व्यर्थ चला जाता है।

13) मनन के बाद उस खजाने से जो खुशी प्राप्त होती है, उस खुशी में स्थित रहने का अभ्यास करो तो व्यर्थ नहीं जायेगा। जैसे भोजन किया, हज़म करने की शक्ति नहीं तो व्यर्थ जाता है ना। इसी प्रकार यह ज्ञान के खजाने आपके प्रति वा दूसरी आत्माओं को दान देने के प्रति नहीं लगाया तो व्यर्थ गया ना।

14) शुभचिन्तन में रहना भी मनन है। मनन से जो खुशी रूपी मक्खन निकलेगा, वह जीवन को शक्तिशाली बना देगा। फिर कोई हिला नहीं सकता। माया हिलेगी, खुद नहीं हिलेंगे। जैसे समझने, समझाने वाले वर्णन मूर्त तो बने हो लेकिन अभी मनन मूर्त बनो। मनन करने से अनुभवी बन जायेंगे। अनुभवी अर्थात् सदा किसी भी प्रकार के धोखे से, दु:ख, दुविधा से परे रहेंगे।

15) सदा याद रखो कि हम निमित्त बनी हुई आत्माओं की चढ़ती कला से ही सर्व का भला है। चढ़ती कला में जाने का साधन है मनन-चिंतन। 'जो हो, जैसे हो, जिसके हो' उस स्मृति में रहो, पहले मनन करो कि हर समय वैसा स्वरूप रहता है? अगर नहीं तो फौरन अपने को चेक करने के बाद चेंज करो।

16- ज्ञान मनन के साथ अपने स्थिति की चेकिंग भी बहुत जरुरी है। हर दिन के जमा हुए खाते में स्वयं से सन्तुष्ट हैं या अभी तक भी यही कहेंगे कि जितना चाहते हैं उतना नहीं। जो स्वयं से संतुष्ट होगा वही विश्व की आत्माओं को संतुष्ट कर सकेगा। सन्तुष्ट रहने वाला सदा प्रसन्नचित रहता है और उसकी सब प्रशंसा करते हैं।

शिवबाबा याद है? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"तपस्या स्वरूप कैसे प्रत्यक्ष करें"

(दादी गुल्जार 07-07-02)

तपस्या करना और तपस्वी मूर्त बनना, इसमें अन्तर है। तपस्या करना वह थोड़े टाइम के लिये है 4-6-8 घण्टा किया, लेकिन तपस्वी मूर्त बनना, जब मूर्त बन गये तपस्या स्वरूप बन गये तो स्वरूप सदा होता है। तो हम सभी सिर्फ तपस्या करने वाले नहीं हैं, योग लगाने वाले नहीं हैं लेकिन योगी जीवन वाले हैं तो जीवन सोते हुए भी, उठते हुए भी है। चलते फिरते या कामकाज करते हुए भी योगी जीवन है। तो योगी जीवन माना सदाकाल। जीवन के घण्टे मुकरर नहीं होते, जीवन तो जब तक जीते हैं तब तक जीवन है। तो हमारी तपस्या या योग सिर्फ जब हम आफिशियल बैठते हैं तब तक नहीं है। बाकी जब हम संगठन में और निश्चित समय पर बैठते हैं तो वायुमण्डल की और बाबा की विशेष मदद अनुभव होती है। वह भी जरुरी है, जैसे अमृतवेले वा शाम को नुमाशाम के लिए बाबा ने हम सबके लिये विशेष डायरेक्शन दिये हुए हैं। लेकिन साथ में बाबा ने कर्मयोगी शब्द भी कहा है। कर्मयोगी का अर्थ यह नहीं है कि जब योग लगाये तब योग हो और कर्म करें तो योग खत्म हो जाये या समा जाये, इमर्ज रूप में नहीं हो।

कर्मयोगी माना योग और कर्म दोनों ही कम्बाइन्ड साथ-साथ हैं। कर्मयोगी माना सदा का योगी। तो हमारा स्वरूप ही तपस्या का है। एक तप है मन को एकाग्र करना, यह है हमारी तपस्या। एकाग्रता माना एक में बुद्धि लगी रहे, मन लगा रहे। एक के अन्त में रहना, यह है एकान्त। बाबा की याद में आप इतने लगन में मगन हो, जो आपको कुछ भी अपने तरफ खींचे नहीं इसको कहा जाता है मन-बुद्धि की एकाग्रता और ऐसी एकाग्रता ही तपस्या है। तपस्या माना एकाग्रता। तपस्या माना एकान्तवासी। एक के अन्त में लगे रहना और कोई बात में नहीं जाना। जो मगन होता है उसको कोई सुधबुध नहीं होती है। मगन होना माना मन बुद्धि हिले नहीं, इसको कहा जाता है तपस्या।

स्मृति में एक बाबा है और वृत्ति में है कि यह सब आत्मायें हैं और कुछ भी नहीं दिखाई देगा, यह नारी है यह नर है, यह काला

है.. यह क्रिश्चियन है, यह बौद्धी है... कहाँ भी बुद्धि नहीं जायेगी। किसको भी देखेंगे तो आत्मा को ही देखेंगे, जैसे यह भी बाबा की प्यारी मीठी आत्मा है। इस प्रकार आत्मा का ज्ञान जब बुद्धि में होगा तभी तपस्या हो सकती है। अगर आत्मा का ज्ञान याद नहीं, तो परमात्मा तो याद आ ही नहीं सकता क्योंकि आत्मा का ही बाप परमात्मा है। और कोई बातों में अगर हम जाते हैं, शरीर के भान में रहते हैं तो शरीर का पिता शिवबाबा है ही नहीं, फिर कनेक्शन कैसे होगा। तो आपस में बातचीत करते हुए, सम्पर्क में आते हुए, चाहे पत्नि हो, चाहे बहन हो, कोई भी हो लेकिन आत्मा रूप में देखें तो हमारी वृत्ति चंचल हो नहीं सकती। यही तपस्या है। तपस्या माना वृत्ति हमारी आत्मा और परमात्मा के तरफ, यह है हमारी तपस्या या योग। तो हमारी योगी जीवन तब होगी जब हम आत्मा, आत्मा को देखें।

अशरीरी माना शरीर की कोई भी कर्मेन्द्रियां, बाबा की याद को नीचे नहीं खींचे इसको कहते हैं अशरीरी अवस्था। यानि हमारी वृत्ति जो है, मन का संकल्प जो है वह और तरफ न हो, बस आत्मा और शिवबाबा। आत्मा को देख रहा हूँ और परमात्मा से मिलन मना रहा हूँ। कामकाज तो आत्माओं से ही होगा ना। कनेक्शन में तो आत्माओं के ही आना पड़ता है ना। इसीलिए बाबा हमेशा जब भी याद की बात बोलते हैं तो यही कहते हैं, अपने को आत्मा समझ मुझे बाप को याद करो। तो हमारा फाउण्डेशन है आत्म-अभिमानी स्थिति।

बाबा ने हमको स्वराज्य अधिकारी बना दिया है, अगर स्वराज्य नहीं तो विश्व का राज्य नहीं। तो स्व राज्य यानि स्व आत्मा का इन कर्मेन्द्रियों के ऊपर राज्य, तभी प्रजा पर राज्य आप कर सकेंगे। तो इससे देखो जो आपकी विशेष सूक्ष्म स्थूल कर्मेन्द्रियां हैं, वह आपके वश में हैं? वश में नहीं हुई तो फिर तपस्या क्या कर सकेंगे! जिसका स्व पर अधिकार नहीं है उसका विश्व पर राज्य कैसे होगा? तो बाबा कहते हैं मैंने यह दर्पण आपको दे दिया है, अपने आपको देखो कम-से-कम कर्मेन्द्रियों को जीत लो। विश्व को छोड़ो, अपने को तो कन्ट्रोल में लाओ। तपस्या स्वरूप प्रत्यक्ष तब होगा जब आपका अपनी कर्मेन्द्रियों के ऊपर कन्ट्रोल होगा और कन्ट्रोल तब होगा जब हम आत्मा स्वरूप में होंगे। पहले मालिक मालिकपने में तो ठहरो। इसलिये तपस्या स्वरूप बनना है, सिर्फ तपस्या करने वाले नहीं बनना है। तपस्या माना सदा आत्म स्वरूप में स्थित हो, देही-अभिमानी स्मृति का ही आसन है। मैं आत्मा हूँ, मैं अशरीरी आत्मा हूँ, मैं देही हूँ, देह नहीं हूँ। इस स्मृति की सीट (आसन) पर बैठ जाओ। भृकुटी भी एक आसन है। इस आसन पर आत्मा बैठी है, तो बस इस पर बैठ जाओ और आत्मा हूँ, आत्मा आत्मा को देख रही हूँ, आत्मा आत्मा से बात कर रही हूँ, यह पाठ बिल्कुल पक्का हो, यही तपस्या है। अगर यह तपस्या आपने नहीं की तो कुछ नहीं किया। तो तपस्या स्वरूप बनो यानि आपके चलने से, आपकी दृष्टि से वह फीलिंग आये, महसूसता आये कि यह आत्मा रूप में देखता है, यह आत्मा रूप की बातें कर रहा है, यह आत्म वृत्ति में रहता है, दूसरे को भी शुभ, शुद्ध भावना, कामना का अनुभव हो। आत्मिक दृष्टि में बहुत ताकत होती है, तब तो सबको यह इच्छा रहती कि बाबा हमें पर्सनल दृष्टि दे, दादी हमें दृष्टि दे। तो आपकी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति और कृति (कर्म) आत्म-अभिमानी होनी चाहिए, तभी आपका तपस्या स्वरूप प्रत्यक्ष हो सकेगा, नहीं तो तपस्या स्वरूप प्रत्यक्ष नहीं हो सकता। और बाबा तो चाहता ही है कि यह मेरे बच्चे विश्व में आत्मिक वातावरण फैलायें। दुनिया में यह झगड़ा, अशान्ति सब बॉडी-कान्सेस के कारण है। तो अभी से तपस्वी बनकर जाना, सिर्फ तपस्या करने वाले नहीं। तपस्वी स्वरूप निरन्तर हो, यही तपस्या है, इसी लक्ष्य को ले करके अपनी इस तपस्या को अविनाशी बनाना है। अच्छा! ओम् शान्ति।

"साक्षात्कार मूर्त स्थिति"

(दादी गुल्जार 8-7-02)

हम सब दिल से यही गीत गाते हैं कि बाबा हमें आप जैसा बनना ही है। अगर दृढ़ता है तो सफलता है ही। लेकिन उसमें सूक्ष्म मन में जरा भी संकल्प न हो, पता नहीं होगा नहीं होगा, करता तो हूँ लेकिन देखेंगे क्या होता है, अगर अपने ही मन में यह संकल्प उठता है तो बाबा कहते हैं यह भी स्वयं के प्रति समझो संशय है। ऐसा संशयबुद्धि कभी विजयन्ती हो ही नहीं सकता। चाहे स्वयं में संशय है, चाहे ड्रामा में है, चाहे बाबा में है, चाहे यज्ञ के ब्राह्मण परिवार में है, किसी में भी संशय नहीं होना चाहिए क्योंकि संशय है तो विजयी नहीं बन सकेंगे इसीलिए हम सबका दृढ़ संकल्प है कि बाबा हमको आप के समान

बनना ही है।

बाबा कहते कि तुम बच्चों को यह स्मृति आनी चाहिए कि हम कितने बार विजयी बने हैं। जो अनगिनत बार बना है, वह फिर अपने में संशय कैसे ला सकता है। हमको यह रूहानी नशा होना चाहिए कि हम ही कल्प पहले बने थे, अभी बन रहे हैं और हर कल्प में मैं ही बनूँगा, यह निश्चय अटल होना चाहिए। लेकिन अटल निश्चय तब होगा जब मन में कोई स्वयं के प्रति या किसी के प्रति भी संशय नहीं हो। पता नहीं शब्द आया माना संशय की मात्रा है। पता नहीं, पता नहीं कहते हो तो इस ब्राह्मण परिवार का जो झाड़ है उससे आपका पत्ता कट जायेगा, इसीलिए यह संकल्प भी मन में नहीं आना चाहिए। निश्चय माना निश्चय।

साक्षात्कार मूर्त तब बनेंगे जब साक्षात् बाप समान बनेंगे। तो बाबा की सबसे पहली-पहली विशेषता क्या रही? शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा को टच किया, प्रेरणा मिली, तो उसी संकल्प में थोड़ा भी संशय लाया? नहीं। इतना बड़ा ज्वैलर था लेकिन कुछ सोचा? नहीं। बस, मुझे जो बाबा कहता है वह करना ही है इसको कहा जाता है निश्चय। जिसे लोग असम्भव कहते हैं वह सम्भव करके दिखाया, संकल्प मात्र भी संशय नहीं हुआ, इसको कहते हैं बाप समान बनना माना साक्षात् बाबा बनना तभी साक्षात्कार मूर्त हो सकते हैं।

पहला फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय भी सिर्फ बाबा में नहीं, सब बातों में निश्चय हो। 1- बाबा में निश्चय 2- ड्रामा में भी निश्चय 3- ब्राह्मण परिवार में 4- स्वयं में। इन चारों निश्चय को बिल्कुल टाइट करो, जो हमारा मन और बुद्धि किसी भी बात से जरा भी हिले नहीं। इसीलिए बाबा का स्लोगन है – सी नो ईविल, टॉक नो ईविल, थिंक नो ईविल (न बुरा देखो, न सुनो, न बोलो, न सोचो) व्यर्थ को देखते हुए भी देखो ही नहीं क्योंकि उससे हमारा कोई काम ही नहीं है, इसको साइडसीन समझो। साइडसीन में बुरा भी देखना पड़ता है तो अच्छा भी देखना पड़ता है लेकिन फिर भी लोग साइडसीन देखने तो जाते ही हैं क्योंकि इसमें भी मनोरंजन करने की कला होती है। तो यहाँ भी चलते चलते कुछ भी होता है, ज्ञान के विपरीत, आप अपनी मस्ती में, फरिश्ता बन करके हल्का डबल लाइट रहकर देखो, सुनो तो उसका असर शक्ल पर नहीं आयेगा। चिन्ता, फिकर अथवा घबराहट की रेखायें देखने को नहीं मिलेंगी। जैसे ब्रह्माबाबा कितना बेफिक्र था, हमको भी बाप के समान बनना है तो ऐसा बेफिक्र बादशाह बनना पड़ेगा, पक्का निश्चयबुद्धि बनना पड़ेगा। कोई भी बात में संशय न हो।

तो कोई भी कुछ करता है हमको साइडसीन समझ करके पार करना है, डबल लाइट बन उड़ते रहना है, अन्दर कोई बोझ नहीं। बोझ होगा तो ऊपर उड़ नहीं सकेंगे। हल्की चीज आपेही उड़ जाती है, तो हम जो कहते हैं तीव्र पुरुषार्थी बनें, साक्षात्कार मूर्त बनें, यह तो बड़ी बात है, पहले वह गुण हैं, वो शक्तियाँ हैं? चेहरे पर मुस्कराहट है, जो साक्षात्कार मूर्त बनो! तो बाप समान बनने के लिए ब्रह्माबाबा की विशेषताओं को पहले जीवन में धारण करो। अच्छा! ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी द्वारा प्राप्त अनमोल रत्न

"सबके प्रति कल्याण की श्रेष्ठ भावना हो तो भाव-भावना और स्वभाव सब मीठे बन जायेंगे"

(30-8-04)

अभी परिवर्तन शब्द भी नहीं कहना है क्योंकि जब सोचेंगे कि मुझे परिवर्तन होना है तो वो लम्बा प्रोसेस लगेगा। कितना होना है वो भेंट करेंगे, जब भेंट करते हैं तो कोई समझते हैं सब ऐसे ही चलता है, करके अलबेले हो जाते हैं। कोई तो संगठन को देख कहते हैं अभी मुझे पता चला कि मैं कैसा पुरुषार्थी हूँ? अपने क्लास में 25-50 होंगे तो समझेंगे मैं अच्छा पुरुषार्थी हूँ लेकिन जब मधुबन में जाते हैं तो पता चलता है मैं कहाँ तक अच्छा पुरुषार्थी हूँ। भेंट किससे करते नहीं है, लेकिन अपने को कभी न कम समझें, न अच्छा समझें। बाबा जो चाहता है वो लक्षण मेरे में आ जायें, यह लक्ष्य कभी भूले नहीं। तो अभी के वातावरण में जो इस प्रकार का वायुमण्डल है, उसमें ऐसों को और ही अच्छा रियलाइजेशन कराता है।

कितना बड़ा संगठन है फिर भी सच्चा सयाना वो जो अपने को देखे। संगठन में अपने को देखे। संगठन में सुपात्र बनके रहना है तो आज्ञाकारी होके रहें, हाँ जी का पाठ

पक्का करें। क्योंकि अरे! भगवान कहे यह कर तो जी बाबा करना चाहिए ना। जैसे मम्मा कहे जी बाबा, हुआ ही पड़ा है, जैसेकि बाबा ने कहा और मम्मा ने या दादी दीदी ने हाँ करके किया। परन्तु यह भी देखा गया है कि दादी दीदी बनना कोई पाग (पगड़ी) नहीं है। लेकिन यह भी अनुभव है कि शान्ति से बड़ों की आज्ञा मानके करते जाओ तो सेवा और शक्ति बाबा देता जाता है, आगे बढ़ाता जाता है इसलिये फिर हर बात में, हर समय हाँ जी का पाठ और ही पक्का होता जाता है। भाग्य है जो बुलाके कहे कि करेंगे? तो सम्पूर्ण बनने वाली आत्मायें जो हैं वो इशारे से समझेंगी और करेंगी। ऐसों को ही फिर बाबा भी हक से सेवायें कराके वर्से के हक्कदार बनाता है। कभी भी बाबा ने हमको बुलाया या कोई सेवा कहा होगा तो हम जैसेकि पहले से ही रेडी हूँ।

तो दृढ़ संकल्प करके उसे ढीला नहीं करो। जिसको जो करने की लगन और लक्ष्य होगा वो यह भी नहीं कहेंगे मैंने आज यह संकल्प दृढ़ किया। संकल्प और साकार होने में देरी नहीं लगेगी। संकल्प आया, मुझे ऐसा बनना है तो बनाने वाला बैठा है। बच्चे आज्ञाकारी नहीं बनते हैं तो भी समझो बच्चों में मोह है। अरे! पहले आप ईश्वर के बच्चे माना ईश्वर का आज्ञाकारी, वफादार और कार्य-व्यवहार में ऐसा ईमानदार बच्चा बनो जो भगवान का हमारे में विश्वास बैठ जाये, तो फिर देखो वे (बच्चे) आपेही ऐसे बनेंगे। भगवान भी कहे यह मेरे ईमानदार, आज्ञाकारी बच्चे हैं। ऐसा अगर संगमयुग पर भगवान से सर्टीफिकेट न मिला या न लिया तो पास विथ ऑनर में कैसे आयेंगे? इस बात की किसको फिक्र है?

आज्ञाकारी अर्थात् एक बाबा दूसरा न कोई, बस। आज्ञा है जी हजूर, जो बाबा कहे इशारा करे। ईमानदार अर्थात् एक पेनी भी नीचे ऊपर करने वाले नहीं हैं। बाबा ने कहा है जहाँ सच्चाई है वहाँ धन की कोई कमी नहीं है। सच्चाई वाले के पास धन आपेही आता है। सच्चे साहब के आगे वो धन नहीं आयेगा तो प्रश्न उठता है फिर वो धन कहाँ गया? तो बाबा उन बच्चों को बहुत प्यार करता है जो सच्चाई से ऐसे प्रभू के वन्डरफुल लाल हैं। कोई कहे पड़ा रहे, कोई कहे क्या करें रखके... तो कितना फ़र्क है। तो भगवान के पास संकल्प का, वाणी का, कर्म और सम्बन्ध का, सबका सारा खाता होता है। दिल और भगवान दूर नहीं है तो अपनी दिल से पूछो कि दिल से भगवान दूर है या भगवान दिल के बहुत पास है? भाग्यवान वो जो दिल से अपने को भगवान के पास देखे और ऐसे जो हैं वो अपना हाथ उठायें क्योंकि दिल में कुछ और है तो वो भी बाबा जानता है। कई समझते हैं साकार में तो नहीं पहचानते थे, अभी तो अव्यक्त होके बैठे हैं तो अभी बाबा यहाँ का क्या जाने! लेकिन नहीं वो सबका सबकुछ जानता है, देखता है क्योंकि वो जानी-जाननहार है। तो अभी जो करना है वो अब कर लें। यह संगठन की शक्ति भी ना-उम्मींदी का संस्कार खत्म करके उम्मीदें पैदा कर लेती है।

अभी भी समय पड़ा है फिर से कोई पुरुषार्थ करे तो रहमदिल बाबा, क्षमा के सागर बाबा फिर भी अपने बच्चों को गले की माला डाल करके साथ ले जा सकता है, ऐसा हमारा बाबा है। लेकिन माया को जरा-सा भी, एक सेकण्ड भी अपने पास आने नहीं दो। आजकल माया कहाँ से आती है? अपने ही संस्कारों से, अपने ही स्वभावों से। काम नहीं, क्रोध भी नहीं, कोई लोभ भी नहीं... अपने पुराने संस्कार की रियलाइजेशन से उसको ईश्वर का बच्चा हूँ, वो स्मृति में लाना भूल गया। ब्रह्माकुमार हूँ समझ गया है, पर शिवबाबा, भोलेनाथ बाबा का बच्चा हूँ तो कितना अच्छा पाला और पढ़ाया है, वो जब याद रहे तो वो याद संस्कारों में भर जायेगी। जो भी याद आती है वो संस्कारों अनुसार ही आती है। संस्कारों में जो कुछ भरा हुआ है, वो काम करता है। अगर संस्कारों में यह नहीं गया कि मैं ईश्वर की सन्तान हूँ, उसका स्टूडेन्ट हूँ तो फिर वही पुरानी बातें याद आती रहेंगी। इसलिये पढ़ाई और पुरुषार्थ में समानता की धारणा से मम्मा बाबा समान संस्कार बनाओ।

ज्ञान और योग का सबूत है – धारणा। आजकल सबको चाहिए दिल को लगने वाली बात और वो तब होगी जब हमारा संगठन धारणा स्वरूप हो, सच्चाई और स्नेह का वातावरण हो जिसमें कोई और स्वभाव नहीं, कोई पुराना संस्कार नहीं। किसी को देखके भी उसका पुराना संस्कार हमको याद आया, तो यह भी मेरा अपना पुराना संस्कार है। जो मुझे किसी को देख करके पुरानी बात याद आई, तो गये बाबा के काम से। रियलाइजेशन अन्दर ही अन्दर चेन्ज करती है। खुद के लिये औरों का मत सोचो वो बदले तो हम बदलें, यह रांग हो जाता है। हम बदलें तो सब बदल जायेगा। बदलना क्या है? जो हम आदि में थे, अनादि थे फिर से उसी स्मृति स्वरूप में रहना है। तो साकार बाबा हमेशा कहते थे 'फिर से' शब्द याद रखो। वही कल्प पहले वाले हैं, बाबा के हैं माना थे, हैं और होंगे – यह गैरंटी है।

सच्चाई पर चलने वाले को कोई नहीं रोकता है परन्तु

अगर हमें सच्चा बनना है तो सच्चा भगवान साथ देता है और हरेक का सहयोग मिलता है इसलिये किसी को दोष न देना। हमें बन्धनमुक्त रहना है माना देह, सम्बन्ध, दुनिया.. बल्कि अपने ऐसे सूक्ष्म संस्कार जो मुझे पर्सनली विघ्न डालते हैं उनसे मुक्त होना है। जब सबके प्रति कल्याण की श्रेष्ठ भावना हो तो भाव और भावना, स्वभाव सब मीठे बन जायेंगे। कडुवाहट निकल जायेगी, अगर थोड़ी-भी कडुवाहट है तो समझो यह संस्कार अपना है। किसी को देख करके हमारे स्वभाव में कडुवाहट आई, इसका मुझे यह अच्छा नहीं लगता है इसलिये इसे देख मेरी शक्ल ऐसी हुई तो यह क्या है? ऐसा सोचने से क्या वो अच्छा बनेगा क्या? मैं अपने को प्यार से आगे बढ़ाऊं, कभी रफ न बनूँ, जो मुझे मेरे ही पांव को पत्थर वा कांटा लगे। इसलिये अपने लिये रास्ता क्लीयर रखो और बाबा हमें सदा साथ देता रहे, यह ध्यान रखो क्योंकि बाबा के साथ के बिगर सेवा या अपनी उन्नति भी नहीं हो सकती है। अकेला कोई कर नहीं सकता है। सब सहयोग भी तब देंगे जब बाबा साथ होगा। अगर मैं अकेली आत्मा थोड़ी अभिमान वश हूँ तो कोई साथ नहीं देगा, तो फिर हवा खाओ। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"वैल्युबुल बनना है तो अपनी जीवन में सर्व वैल्युज़ धारण कर लो"

1) बाबा आया है हम बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनाने। तो गुण अलग हैं, कलायें अलग हैं। जैसे आज किसी को लिखने की कला है, कोई को भाषण करने की कला है, कोई को पालना करने की कला है, कोई को सन्तुष्ट करने की कला है .... इन कलाओं से भी हम श्रेष्ठ बनते हैं। यह कलायें नम्बरवार अपने-अपने वरदानों से मिलती हैं।

2) मायाजीत, जगतजीत बनने के लिए सर्वशक्तियों और सर्वगुणों से सम्पन्न बनना है। अगर कोई न कोई शक्ति की कमी है तो माया किसी न किसी रूप में योग खण्डित करती रहेगी फिर अखण्ड योगी भी नहीं बन सकते हैं। हम सबको बाबा इस वक्त जो कहते हैं कि बच्चे तुम्हें एवररेडी बनना है तो इसके लिए हर एक को शक्तिशाली, बलवान बनना है।

3) हमारी संगमयुग की यह लाइफ बहुत वैल्युबल है, जितना-जितना हम अपने जीवन में वैल्युज़ धारण करते उतना वैल्युबल बनते हैं। जैसे 56 गुण गाये जाते, ऐसे 56 अवगुण भी हैं, इसकी भी लिस्ट बनाओ। जैसे ईर्ष्या है, आवेश है... इनके भी बहुत बाल बच्चे हैं। तो देखो कितने गुणों की माला मैंने धारण की है और अभी तक कितने अवगुण रहे हुए हैं?

4) बाबा ने हर मुरली में अनेक स्वमान दिये हैं, वरदान दिये हैं, वह भी लिखो और चेक करो कि कौन-कौन से स्वमान सदा स्मृति में रहते हैं और कौन-कौन से वरदान मैंने बाबा से लिये हैं? किस वरदान की कमी मेरे में है? उसका कारण और निवारण निकालो।

5) रोज़ हर बात को कम से कम एक घण्टा मनन करो, चिन्तन करो। ऐसी 100 प्वाइंट्स पहले नोट करो फिर 100 दिन में 100 घण्टा मनन-चिन्तन करके उसमें सम्पन्न बनो। 100 घण्टे के योग से कमजोरियों को समाप्त करके विजयी बनो, इसके लिए एकाग्रता का अभ्यास करो। एक सेकेण्ड में संकल्प को स्टॉप कर लो और उपराम हो जाओ, इस देह से उड़ जाओ, वतन में बाबा के स्वीट साइलेन्स होम में बैठ जाओ, तब यह जीवन प्यारी-न्यारी बनेंगी।

6) अब तक सेवायें बहुत की, सेवाओं का बहुत अच्छा शौक है लेकिन अब मेवा खाओ। मेवा है पहले खुद को कम्पलीट बनाओ फिर पूछेंगे कि हम मुक्त कहाँ तक किन-किन बातों में बने हैं? अभी पुराने संस्कारों से ही मुक्त नहीं तो जीवनमुक्ति का मेवा क्या खायेंगे? जब संस्कारों से मुक्त बनो तो जीवनमुक्ति का मीठा मेवा भी मिले।

7) बाबा ने कहा है कि तुम्हें सर्वंश त्यागी बनना है तो उसकी डिटेल निकालो – सर्वंश त्यागी किसे कहा जाता है? पवित्रता की गुह्य भाषा क्या है? सत्यता की शक्ति किसे कहा जाता है? उसे भी क्लीयर करो। क्रोध मुक्त बनने के लिए, क्रोध आने के कारण और उसका निवारण निकालो। हमारे सेन्टर पर सेवा में किस प्रकार के विघ्न हैं? वह विघ्न क्यों है? उन विघ्नों का कारण क्या है और फिर उनका निवारण क्या है? हमारी आपस में एकता क्यों नहीं होती? मतभेद क्यों होता? उसका कारण क्या है? हमें बाबा को प्रत्यक्ष करना है तो हम कैसा वातावरण बनायें, जो वातावरण बाबा को प्रत्यक्ष करे?

हमारे में योग की कमी क्यों है? उसी कमी को हम किस तरह से अटेन्शन रख करके भरें जो हमारी योगयुक्त स्थिति हो? हमारे में सुस्ती क्यों है? अलबेलापन क्यों है? और इससे मुक्ति कैसे हो? यह सब छोटे कारण हैं लेकिन हमारे जीवन के बन्धन हैं। इस प्रकार के बन्धनों की लिस्ट निकालो। ईश्वरीय मर्यादायें क्या है, जिनके टूटने से डिस-सर्विस होती है? बाबा श्रीमत किसको कहते हैं? हम श्रीमत का पालन करते हैं या नहीं? नहीं करते तो क्यों? श्रीमत का पालन करना जरूरी क्यों है? इस प्रकार की टॉपिक पर रूह-रूहान करो और उसके कारण और निवारण निकालो तो आप लोगों को बहुत मज़ा आयेगा और उन बातों से आप निवृत्त भी हो जायेंगे। हमारी यह लाइफ ट्रस्टी लाइफ है? किसी भी चीज़ में आसक्ति तो नहीं है? थोड़ा भी किसी देहधारी से मोह तो नहीं है? खुद से अथवा दूसरों से हम नष्टोमोहा बने हैं? ऐसी प्वाइंट्स पर डिसकस करो तो भरपूर हो जायेंगे। अच्छा।

मधुबन में चली कार्यशाला – 'व्रत'

व्रत किसे कहा जाता है? लक्ष्य और प्राप्तियां

परिभाषा:

☆ अपनी मनोवृत्तियों को सम्पूर्ण परिवर्तन करने के लिए दृढ़ता सम्पन्न संकल्प लेना और मन-वचन-कर्म में सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करना ही व्रत है, जिसके लिए चाहे कुछ भी हो जाए डू आर डाई की भावना को जागृत करना है।

☆ अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अन्त तक जागृत रहना तथा सम्पूर्णता प्राप्त कर लेना ही व्रत है।

☆ अपने नियम, मर्यादा और डिसीप्लेन में रहना ही व्रत है।

व्रत का उद्देश्य क्या है?

☆ अपने आपको सम्पूर्ण परिवर्तन करना, स्वभाव संस्कारों को परिवर्तन कर इज़ी नेचर बनाना, संगठन को मजबूत बनाने के लिए, कर्मातीत अवस्था तथा सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए, बापदादा को प्रत्यक्ष करने के लिए, आलस्य और अलबेलेपन को सदा के लिए विदाई देने के लिए, वातावरण को पॉवरफुल बनाने के लिए, मुक्ति और जीवनमुक्ति प्राप्त करने के लिए, स्वयं सन्तुष्ट परिवार सन्तुष्ट, बापदादा को सन्तुष्ट करने के लिए, और बापदादा द्वारा सर्व शक्तियों को तथा विल पॉवर प्राप्त करने के लिए व्रत लेना और उसे प्राप्त करके ही छोड़ना, यही व्रत लेने का उद्देश्य है।

संगमयुग पर कौन-कौन-से व्रत लेने हैं?

☆ अमृतवेले को विधि पूर्वक और पॉवरफुल बनाने का व्रत, प्रभु-अमृतवाणी, मुरली रेग्युलर और पंचुअल सुनने तथा धारण करने का व्रत, एक बल एक भरोसे में रहने का व्रत, शुभ भावना और शुभ कामना रखने का व्रत, अन्तर्मुखता तथा एकांतवास में रहने का व्रत, मन-वचन-कर्म में सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करने का व्रत, दृष्टि को सम्पूर्ण सिविलाइज्ड बनाने का व्रत, दूसरों के अवगुणों को न देखने का व्रत, खान-पान की सम्पूर्ण शुद्धता और योगयुक्त रहकर भोजन स्वीकार करने का व्रत, संगदोष से दूर रहने का व्रत, सम्पूर्ण मंजिल को प्राप्त करने का व्रत, मन्सा-वाचा-कर्मणा किसी को न दु:ख देना न दु:ख लेने का व्रत...।

व्रत को धारण करने की विधि :

☆ अमृतवेले लिए व्रत को बापदादा के सामने बैठकर बार-बार रिवाइज करने से, देही-अभिमानी रहने के अभ्यास से, किये हुए व्रत को बार-बार रिपीट करना है कि प्राण जाएं पर वचन न जाए, चार्ट रखने से, चेकिंग और अटेन्शन रखने से, साक्षीपन की स्थिति तथा बापदादा को साथी बनाकर रखने से, एकांतवासी, अन्तर्मुखता के अभ्यास से, संगठन के बीच में आपसी आदान-प्रदान करने से व्रत को धारण कर सकते हैं।

व्रत रखने से फायदे:

☆ कर्मेन्द्रियाँ शान्त और शीतल हो जाती हैं, लक्ष्य की सहज ही प्राप्ति हो जाती है। मायाजीत और प्रकृतिजीत बनते जाते हैं, आत्म संयम होने लगता है, बाबा से तथा बड़ों से दुआयें मिलने लगती हैं, व्यर्थ की समाप्ति तथा आत्म-सन्तुष्टि होने लगती है, शान्ति दूत बनने में और बोल में शक्ति आती है। पुराने स्वभाव-संस्कार परिवर्तन होने लगते हैं, मनवांछित फल प्राप्त होता है, कथनी और करनी एक हो जाती है, बेहद की खुशी मिलती है, औरों के लिए प्रेरणा का श्रोत बन जाते हैं...।